भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

"सूरदास की वात्सल्य भावना"

जीवन का आधार प्रेम को माना जा सकता है। यह प्रेम, पशु, पक्षी, मनुष्य आदि सभी प्राणियों में पाया जाता है। इस प्रेम के अनेक स्वरूप हैं, जैसे- समवयस्कों में मैत्री या सखा भाव के रूप में, पति-पत्नी के बीच दाम्पत्य भाव के रूप में, गुरुजनों एवं महापुरुषों के प्रति श्रद्धा-भाव के रूप में, पुत्र-पुत्री, अनुज-अनुजा एवं अपनों से उम्र में छोटे व्यक्ति के प्रति वात्सल्य भाव के रूप में दिखाई देता है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि वात्सल्य भावना प्रेम का वह स्वरूप है, जिसमें किसी छोटे व्यक्ति या शिशु के प्रति निश्छल एवं निष्कपट प्रेम की भावना रहती है। जिसको देखकर हमारा हृदय रूपी समुद्र प्रेम रूपी तरंगों से आह्लादित हो उठता है। प्रेम की निर्मल एवं पवित्र स्थिति वात्सल्य ही है। जिसके अन्तर्गत सहज-सुकुमार बालक की चेष्टाओं, क्रीड़ाओं एवं उट-पटांग कार्यों की प्रधानता होती है, जिसे देख-देखकर आनन्द विभोर होकर हम अपने आपको भूल जाते हैं। सूरदास ने अपने काव्य में इस वात्सल्य भाव का वर्णन अत्यन्त मार्मिक एवं सजीव रूप में किया है। इसलिए सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य में अनुपम एवं अद्वितीय है। सूरदास के वात्सल्य वर्णन की प्रशंसा करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "बाल सौन्दर्य एवं स्वभाव के चित्रण में जितनी सफलता सूर को मिली है, उतनी अन्य किसी को नहीं। वे अपनी बन्द आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए हैं।" डॉ० रामकुमार वर्मा के अनुसार, "बाल कृष्ण के शैशव में, श्रीकृष्ण के मचलने में, माँ यशोदा के दुलार में हम विश्वव्यापी माता-पुत्र प्रेम देखते हैं।" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि, "यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृ-हृदय का ऐसा

स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है।" सूर के वात्सल्य वर्णन के सन्दर्भ में डॉ० हरवंशलाल शर्मा का मत है कि, "सूर का वात्सल्य-भाव भी विश्व साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है।" वास्तव में सूरदास ने श्रीकृष्ण की बाल सुलभ चेष्टाओं, लीलाओं एवं क्रीड़ाओं का ऐसा सजीव हृदयग्राही एवं प्रभावशाली वर्णन अपने काव्य में किया है, जिसे देख-पढ़कर मन मुग्ध हो जाता है। सूर जैसा वास्तविक, आकर्षक, एवं रमणीय, एवं स्वाभाविक वात्सल्य वर्णन आज तक कोई कवि नहीं कर सका है। इसलिए सूर का वात्सल्य वर्णन पूरे विश्व में अतुलनीय है। सूरदास के वात्सल्य वर्णन को अध्ययन की दृष्टि से दो वर्गों — पहला संयोग पक्ष और दूसरा 'वियोग पक्ष' में विभक्त किया जा सकता है।

संयोग पक्ष —

सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य का अक्षय निधि है। सूरदास के काव्य में कृष्ण के बाल सौन्दर्य के साथ-साथ जैसा बाल मनोविज्ञान का वर्णन मिलता है, वैसा कहीं अन्यत्र नहीं मिलता। सूर ने बाल वृत्तियों का निरूपण, बालक की चेष्टाएँ, माँ की पुत्र के प्रति वात्सल्य आदि का मर्मस्पर्शी एवं मनोहारी चित्रण अपने काव्य में किया है। वे वात्सल्य के संयोग पक्ष का बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। वात्सल्य के संयोग पक्ष में सूर ने जहाँ एक ओर कृष्ण के बाल रूप का सहज वर्णन किया है, तो वहीं दूसरी ओर बालोचित चेष्टाओं का मनोहारी वर्णन। बाल छवि का वर्णन करते हुए वे कहते हैं —

"हरिजू की बाल छवि कहौं बरनि।
सकल सुख की सींव कोटि मनोज सोभा हरनि॥"

बालक कृष्ण बहुत ही सुन्दर हैं। बालकृष्ण धूल से लिपटे हुए घुटनों के बल चलते हुए मीठी-मीठी बोली

LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

बोल रहे हैं। माता यशोदा इस छवि को देखकर आह्लादित हो रही हैं—

"हौं बलि जाउँ छबीले लाल की।
घूसर चूरि घुटुरुवन रेंगनि बोलन बचन रसाल की॥"

कृष्ण मुख पर दधि का लेप किए हुए दौड़ रहे हैं और अपनी ही परछाई को पकड़ने की चेष्टा कर रहे हैं, तो कहीं किलकारी भर रहे हैं। इसका मनोरम चित्रण करते हुए सूरदास कहते हैं—

"सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुन चलत रेनु तन मण्डित मुख दधि लेप किए॥"

सूरदास ने बाल कृष्ण की लीलाओं का मनोहारी चित्रण करने में जैसी सफलता प्राप्त की है वैसी किसी दूसरे कवि ने नहीं। ऐसे ही कृष्ण के किलकारी भरी हँसी का वर्णन करते समय मनोरम चित्र खींचते हैं—

"किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आँगन बिम्ब पकरिबे धावत॥"

सूरदास ने बालकों के हृदयस्थ मनोभावों का चित्रण बड़े ही मनोरम ढंग से किया है। उनके काव्य में बच्चों खीझ, पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा, बुद्धि की चतुराई, अपराध को छिपाने की प्रवृत्ति, भोले-भाले तर्क आदि का विस्तृत चित्रण देखने को मिलता है। बालक कृष्ण दूध नहीं पी रहे हैं. माता यशोदा लालच देती हुई कृष्ण को दूध पिलाने का प्रयत्न कर रही हैं कि दूध पीने से तुम्हारी चोटी बढ़ जाएगी, इसपर कृष्ण एक हाथ से अपनी चोटी पकड़ कर और दूसरे हाथ से गिलास का दूध पकड़ कर पीते हुए पूछ रहे मैया कब बढ़ेगी मेरी चोटी? इस भाव चित्रण सूर इस प्रकार संजीव करते हैं—

"मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी।
कितो बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लाँबी मोटी।
काँचो दूध पियावत पचि-पचि, देत न माखन रोटी॥"

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

कृष्ण माखन चोरी करते हुए रंगों हाथ पकड़े गए हैं। मुख पर माखन लगा हुआ है फिर भी माता यशोदा के सम्मुख सफाई दे रहे हैं कि मैं माखन नहीं खाया हूँ। इसका वर्णन सूर ने इन पंक्तियों के माध्यम से किया है— "मैया मैं नाहिं माखन खायौ।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लिपटायौ॥"

सूरदास ने बाल आक्रोश का वर्णन भी सुन्दर ढंग से किया है। बलराम कृष्ण को चिढ़ाते हैं कि तू यशोदा मैया का पुत्र नहीं है तुझे तो मैया ने मोल लिया है। इसपर कृष्ण खीझ जाते हैं और यशोदा के सामने अपने बाल सुलभ आक्रोश इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं—
"मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसौं कहत मोल को लीन्हो तू जसुमति कब जायो॥"

कृष्ण ने हठ पकड़ रखी है कि मुझे चन्द्र खिलौना चाहिए। सूर ने बाल कृष्ण की हठ का वर्णन निम्न रूप में किया है— "मैया मैं तो चन्द खिलौना लैहों।
जैहों लोहि अबै धरनी पै तेरी गोद न ऐहों॥"

वियोग पक्ष —

जितनी तन्मयता से सूरदास ने वात्सल्य के संयोग पक्ष का वर्णन अपने काव्य में किया है, उतनी तन्मयता से वात्सल्य के वियोग पक्ष का भी। वियोग वात्सल्य की सबसे सुन्दर झलक सूरदास ने कृष्ण के मथुरा गमन पर प्रस्तुत की है। कृष्ण के मथुरा के लिए प्रस्थान करते समय माता यशोदा कितनी विकल हैं। इसका वर्णन करते हुए सूरदास लिखते हैं— "जसोदा बार-बार यों भाखै।
है कोई ब्रज में हितू हमारौ चलत गोपालहिं राखै॥"

कृष्ण मथुरा चले गए हैं। कृष्ण को मथुरा छोड़कर नन्द अकेले ही वापस आ गये हैं। उस समय माता यशोदा के हृदय में वात्सल्य रस की अनेक धारा फूट पड़ती हैं और वे अपने प्रिय पुत्र के वियोग

में सहज दीप्ति, आकुलता एवं व्यथा से परिपूर्ण होकर अपने पति नन्द को फटकारती है। इसका वर्णन सूरदास ने इस प्रकार किया है—

"जसुदा कान्ह-कान्ह कै बूझै।
फूटि न गईं तुम्हारी चारों कैसे मारग सूझै॥"

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर माता यशोदा का वात्सल्य-पूर्ण हृदय पुत्र के वियोग में व्याकुल होने लगता है। उन्हें लगता है कि कृष्ण की आदतों से वे जितनी परिचित थी उतना देवकी कहाँ परिचित हैं। इसलिए वे देवकी को सन्देश भेजती हैं—

"संदेसो देवकी सौं कहियौ।
हौं तो धाइ तिहारे सुत की, दया करत ही रहियौ॥"

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि सूरदास की वात्सल्य भावना बहुत ही मनोरम, मार्मिक, स्वाभाविक, वास्तविक एवं हृदयस्पर्शी है। सूर के वात्सल्य वर्णन में तन्मयता, सहजता एवं मनोवैज्ञानिकता है। इसलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं, "आगे होने वाले कवियों के शृंगार और वात्सल्य की अटकलें सूर की जूठी सी जान पड़ती हैं।" कहकर सूरदास के वात्सल्य वर्णन की प्रशंसा की है। निश्चय ही सूरदास को वात्सल्य का सम्राट कहा जा सकता है क्योंकि उन्होंने अपने काव्य में बाल-प्रकृति एवं बाल-मनोवृत्तियों का सहज चित्रण किया है।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास